राज्य अध्याय 26

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **भजन संहिता 101,103,104 और 107**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 101,103,104 और 107) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर की महानता)*** **(2) 1इतिहास 29:11**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(2) परमेश्वर महिमामय हैं। 1इतिहास 29:11. हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान् ठहरा है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)*** **रोमियों 7:1-13**

परिचय। **रोमियों 7:1-13** एक साथ अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।

धार्मिकता (औचित्य) और पवित्रता के लिए व्यवस्था के बंधन से मुक्ति आवश्यक है।
रोमियों के अध्यायों 3 और 4 में पौलुस दिखाता है कि हमें परमेश्वर के सामने *धर्मी घोषित किए जाने के लिए व्यवस्था के बंधन से* मुक्त होने की आवश्यकता है।
रोमियों के अध्याय 6 और रोमियों 7: 1-6 में पौलुस दिखाता है कि हमें परमेश्वर के सामने *पवित्र जीवन जीने के लिए व्यवस्था के बंधन से* मुक्त होने की आवश्यकता है।
रोमियों 7 : 7 - 25 में ,पौलुस हमें व्यवस्था के लाभ और प्रभाव को दर्शाता है।

बंधन को व्यवस्था से मुक्त करना आवश्यक है, इसलिए नहीं कि व्यवस्था में कुछ गलत है, बल्कि इसलिए कि लोगों ने व्यवस्था को परमेश्वर के सामने औचित्य और पवित्रता करने के *मायने (साधन)* में बदल दिया है। व्यवस्था से रिहाई आवश्यक है, क्योंकि व्यवस्था किसी व्यक्ति को धार्मिक या पवित्र नहीं बना सकता है! व्यवस्था

केवल लोगों को उनके उदासीन पापी स्वभाव का अनुभव करवा सकता है और उन्हें पाप का ज्ञान और उनकी पापबुद्धि का गहरा अहसास दिला सकता है।

पाप, व्यवस्था और अनुग्रह के संबंध में एक मसीही की स्थिति,

रोमियों के अध्याय 6 में पौलुस ने पाप के संबंध में मसीही की स्थिति का वर्णन किया है। वह कहता है कि मसीही *पाप की शक्ति के बंधन* से मुक्त है। उनका कहना है कि विश्वासी के विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के अनुग्रह से परमेश्वर के न्यायसंगतता का सत्य विश्वास करने वाले को पाप करने या पाप करते रहने का अधिकार नहीं देता है! विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा न्यायसंगतता की स्थिति पवित्रता की स्थिति में ले जाहि है और इसके परिणामस्वरूप पवित्र जीवन जीने की प्रक्रिया (पवित्रता) होती है!

रोमियों के अध्याय 7 में पौलुस ने *व्यवस्था के संबंध में मसीही की स्थिति* का वर्णन किया है। उनका कहना है कि मसीही *व्यवस्था के बंधन* (न्यायसंगतता के साधन के रूप में और पवित्रीकरण के साधन के रूप में) से मुक्त है। वह इस सच्चाई को दर्शाता है और पुष्टि करता है कि मसीही अब ''व्यवस्था के तहत'' नहीं है, लेकिन ''अनुग्रह के तहत'' (रोमियों 6:14) वह इस परिवर्तन के परिणामों को व्यवस्था से मसीह के संबंध के रूप में बताता है। इससे पहले, व्यवस्था के तहत व्यक्ति मौत के लिए फल बो रहा था। वर्तमान में, अनुग्रह के तहत मसीही परमेश्वर को फल देता है।

रोमियों को भेजे गए पत्र में व्यवस्था।

रोमियों को लिखे पत्र में, ''व्यवस्था'' शब्द पूर्ण अर्थों में परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता को दर्शाता है जिसे सभी लोगों को बचाने के लिए उनको 100% धर्मी और पवित्र होना चाहिए और लोगों के सभी पापों को 100% सजा दी जानी चाहिए। व्यवस्था परमेश्वर का संपूर्ण नियम है और मोक्ष के लिए परमेश्वर की पूर्ण शर्त (तुलना करें रोमियों 10:5 से)।

और सामान्य अर्थों में यह परमेश्वर की पूर्ण धार्मिक और पवित्र मांगों या आवश्यकताओं को संदर्भित करता है जो नैतिक व्यवस्थाओं, औपचारिक (अनुष्ठान) व्यवस्थाओं और इजरायल के नागरिक व्यवस्थाओं में व्यक्त किए जाते हैं, लेकिन विशेष रूप से वे यहूदी शिक्षक (रब्बी का) के सामान्य रूप से विस्तारित परंपराओं द्वारा समझाए जाते हैं (613 मानव निर्मित व्यवस्था)।

- *नैतिक व्यवस्थाएं* (दस आज्ञाओं) ने पुराने नियम की अवधि के दौरान लोगों को सिखाया कि कैसे परमेश्वर ने मांग की कि उन्हें परमेश्वर और उनके पड़ोसियों के प्रति परमेश्वर के लोगों के रूप में धार्मिक और पवित्र जीवन जीना चाहिए।
- *औपचारिक नियम* (पवित्र स्थानों, पवित्र कार्यालयों, पवित्र समय और पवित्र कार्यों के संबंध में) ने पुराने नियम की अवधि के दौरान लोगों को सिखाया कि वे कैसे परमेश्वर के पास पहुंच सकते हैं, आराधना कर सकते हैं और सेवा कर सकते हैं।
- *नागरिक व्यवस्थाएं* (राजा और न्यायाधीशों, दंड और क्षतिपूर्ति व्यवस्थाओं के संबंध में) ने पुराने नियम की अवधि के दौरान लोगों को सिखाया कि उन्हें अन्यजातियों के देशों के बीच परमेश्वर के लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में कैसे कार्य करना चाहिए।

रोम में यहूदी अभी भी व्यवस्थायी रूप से *''व्यवस्था के अधीन''* रह रहे थे। और वहां यहूदी पृष्ठभूमि (और कुछ पेशेवरों) से धर्मान्तरित मसीही अल्पसंख्यक थे जो अभी भी *भावनात्मक रूप से ''व्यवस्था के अधीन''* रह रहे थे। वे मूसा के व्यवस्था (नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्थाओं) के साथ बड़े हुए थे।

इस स्थिति के कारण यहूदी पृष्ठभूमि के मसीहियों जो व्यवस्था के साथ बड़े हुए थे और अन्यजातियों की पृष्ठभूमि के मसीही जो बिना व्यवस्था के बड़े हो गए थे, के बीच तनाव पैदा हो गया। मसीही यहूदियों में भी

तनाव था, क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि कोशिश करने के बावजूद भी वे व्यवस्था का पालन नहीं कर सकते थे, (तुलना करें रोमियों 8:7-8 से)! क्योंकि वे धार्मिक और भावनात्मक रूप से ''व्यवस्था के अधीन'' रहते थे, वे वैसे ही बने रहे जैसे ''मूसा के व्यवस्था के तहत युद्ध के दास या कैदी'' थे, भले ही वे मसीही बन गए थे।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 7:1-13 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

7:1-6

खोज 1. **पौलुस न्यायसंगतता और पवित्रता के लिए व्यवस्था की अपर्याप्तता को दर्शाता है।**

पौलुस व्यवस्था के संबंध में मसीही की स्थिति सिखाता है। यह खंड रोमियों 6: 14, में ग्रहण की गई स्थिति का एक चित्रण और पुष्टि है, ''हम व्यवस्था के तहत नहीं हैं, लेकिन अनुग्रह के अधीन हैं''। पौलुस परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में परिवर्तन के परिणामों को दिखाता है जब हम अभी भी ''व्यवस्था के अधीन'' और ''अब हम अनुग्रह के अधीन हैं''।

(1) रोमियों 7:1 में पौलुस का तर्क है

व्यवस्था के पास केवल तब तक अधिकार है जब तक एक व्यक्ति वहां रहता है।

यहूदी, यहूदी मसीही और रोम में मुकदमा चलाने वाले जो व्यवस्था के तहत जीना चाहते थे और वास्तव में अभी भी व्यवस्था के अधीन रहते थे, और 100% व्यवस्था का पालन करने के लिए पूरी तरह से बाध्य थे! (गलतियों 3:10; याकूब 2:10)। जब तक वे ''व्यवस्था के अधीन'' रहते थे, व्यवस्था ने उन पर बिना किसी समझौते के शासन किया। हालांकि, व्यवस्था का अधिकार और प्रभुत्व अस्थायी होता था, जब तक वह ''व्यवस्था के अधीन'' रहते थे (तुलना करें 3:23-4:7 से)।

(2) रोमियों 7:2-4 मे, पौलुस दलील देता है

जब कोई व्यक्ति मर जाता है, तो व्यवस्था के पास अधिकार नहीं रह जाता है।

व्यवस्था से व्यक्ति का रिश्ता विवाह के रिश्ते की तरह होता है। जब तक दोनों शादी के साथी रहते हैं, वे विवाह के व्यवस्था से बंधे रहते हैं। लेकिन जब एक साथी की मृत्यु हो जाती है, तो दूसरा विवाह के व्यवस्था से मुक्त हो जाता है और फिर से शादी कर सकता है।

इसी तरह, जब कोई व्यक्ति व्यवस्था के साथ संबंध समाप्त करता है, तो वह यीशु मसीह के साथ एक नया संबंध शुरू करने के लिए स्वतंत्र है। यहूदियों के सम्मान के लिए, पौलुस यह नहीं कहता है कि ''व्यवस्था की मृत्यु हो गई'', लेकिन यह कि ''व्यक्ति व्यवस्था के अधिकार और प्रभुत्व के लिए मर गया है।'' पौलुस इस सच्चाई को मसीहियों के व्यवस्था से सम्बन्ध पर लागू करता है।

यीशु मसीह की *शाब्दिक मृत्यु* और यीशु मसीह के साथ मसीहियों की *आत्मिक मृत्यु* के माध्यम से (रोमियों 6:3-4), मसीही ''पाप के लिए मरें'' (रोमियों 6:2) है। यही है, उन्हें ''अपराध, दंड और पाप की शक्ति'' से मुक्त किया गया है। उन्होंने अपने पापों के प्रति अपनी निष्ठा को त्याग दिया है और पापी दुनिया के आकर्षण और प्रलोभन को ''नहीं'' कहा है। (तुलना करें कुलुस्सियों 3:3)।

यीशु मसीह की *शाब्दिक* मृत्यु और यीशु मसीह के साथ मसीहियों की *आत्मिक* मृत्यु के माध्यम से, मसीही भी ''व्यवस्था के लिए मर गए'' (रोमियों 7:4अ) है। अर्थात्, वे ''व्यवस्था के अधिकार और प्रभुत्व से मुक्त कर दिए गए हैं।'' परमेश्वर की आवश्यकता और व्यवस्था के रूप में मूसा के व्यवस्था में व्यक्त ापलम गए है ''व्यवस्था द्वारा और अधिक समय तक या व्यवस्था द्वारा शासित होने के लिए नहीं, बल्कि यीशु मसीह से संबंधित होने और यीशु मसीह द्वारा शासित होने के लिए है। उन्होंने (नैतिक, औपचारिक और नागरिक) व्यवस्था को बनाए रखने के अपने प्रयासों को उचित ठहराया है, क्योंकि यीशु मसीह को उनके सभी पापों के लिए दंडित किया गया था और यीशु मसीह ने *उनके स्थान पर* व्यवस्था को पूरा किया।

जब मसीही यीशु मसीह के साथ एक नया रिश्ता *शुरू करते हैं,* तो वे अपने पापी स्वभाव के पूर्व संबंध को, परमेश्वर के व्यवस्था (उनकी धार्मिक आवश्यकता) और मूसा के व्यवस्था (न्यायसंगत होने के साधन के रूप में) के लिए *समाप्त कर देते हैं।*

(3) रोमियों 7:4ब-5 में, पौलुस सिखाता है
व्यवस्था के अधीन लोग मौत के लिए फल का उत्पादन करते हैं,
लेकिन यह कि अनुग्रह के अधीन लोग (मसीही) परमेश्वर के लिए फल लेते हैं।

जो लोग पाप के स्वभाव से नियंत्रित होते हैं और उनमें निहित व्यवस्था के द्वारा पैदा किए गए पाप के जुनून मौत के फल को लाते हैं। लेकिन वे लोग जो व्यवस्था (परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता) के लिए मर चुके हैं और मसीह के साथ रखे गए हैं, परमेश्वर को फल देते हैं (तुलना करें गलतियों 5:22-23)।

मसीह अपना नया (पुनर्जीवित) जीवन मसीहियों में जीता है (गलतियों 2; 20)। पहले कि लोग ''व्यवस्था'' के तहत जीवन नहीं जी सकते वे *अब मसीह के साथ और मसीह के लिए नया (पुनर्जीवित) जीवन जीना चाहते हैं* (कुलुस्सियों 3:3;1:16)। मसीही अब व्यवस्था के संरक्षकता (अधिकार और नियम) के अधीन नहीं हैं (मूसा के व्यवस्था में व्यक्त की गई परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता), लेकिन अब यीशु मसीह के हैं और यीशु मसीह के अधिकार और आधिपत्य के अधीन हैं (गलतियों 3:23-4:7)।

(4) रोमियों 7:6 में, पौलुस सिखाता है
कि मसीही आत्मा के नए तरीके से सेवा करते हैं
न कि लिखित नियमों के पुराने तरीके से।

जब तक लोग (विशेष रूप से यहूदी) ''शरीर'' में रहते हैं, अर्थात, उनके उत्थान से पहले, वे व्यवस्था (परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता के अनुसार मूसा के व्यवस्था में व्यक्त) और ''व्यवस्था के तहत'' जीवित रहते हैं। फिर वे ''पत्र के पुराने तरीके (लिखित नियम)'' की सेवा करते हैं और व्यवस्था (मूसा के) को बनाए रखते हुए उचित और पवित्र होने का प्रयास करते हैं।

लेकिन वे लोग जो व्यवस्था से मुक्त होते हैं (परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता के रूप में) ''आत्मा के नए तरीके से सेवा करते हैं''। वे ''अनुग्रह के अधीन हैं'' (तुलना करें रोमियों 6:14 से)। वे यीशु मसीह में अपने विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की कृपा से ''धार्मिकता और पवित्रता की स्थिति'' के अधिकारी हैं। उनके पास अब लिखित व्यवस्था ''अभिभावक'' के रूप में नहीं है, लेकिन उनमें आत्मा है (मसीह की आत्मा जो उन पर

राजा के रूप में शासन करती है), (तुलना करें यिर्मयाह 31:33; यहेजकेल 36;37)।

7:7–13

खोज 2. **पौलुस अपने स्वयं के अनुभव से दिखाता है कि व्यवस्था क्या कर सकता है।**

नैतिक व्यवस्था अनुभव, ज्ञान और पाप की पुष्टि करता है।

नैतिक व्यवस्था (उदाहरण के लिए, दस आज्ञाएँ) पाप के स्वभाव में केवल बुरी इच्छाओं को उत्तेजित कर सकते हैं (पाप की भावनाओं को जगा सकते हैं), (रोमियों 7:5) और इस प्रकार एक व्यक्ति को यह पता चलता है कि वास्तव में उसके पापी स्वभाव को कैसे चित्रित किया गया है। नैतिक व्यवस्था उसे परमेश्वर के सामने सही नहीं ठहरा सकता है और उसे परमेश्वर के सामने पवित्र रहने का कारण भी बना सकता है। इसके बजाय, व्यवस्था उसे केवल उसके पाप का ज्ञान, अनुभव और दृढ़ विश्वास दे सकता है (अर्थात, उसकी धार्मिकता की कमी और पवित्रता की कमी)!

याद रखें कि शब्द ''पाप'' का अर्थ हैः

- ''अपने जीवन में परमेश्वर के लक्ष्य को *याद न रखना*'' (तुलना करें नीतिवचन 19:2 से)
- ''जीवन के लिए परमेश्वर (यीशु मसीह की धार्मिकता) के आदर्श मानक को *कम करने के लिए*'' (रोमियों 3:23)
- ''परमेश्वर की धार्मिक माँगों को पूरा करने के लिए (100% धर्मी और 100% पवित्र होने के लिए)'' (रोमियों 4:15)!
- ''परमेश्वर और उनके जीवन के तरीके के खिलाफ *विद्रोह करने के लिए*'' (यशायाह 1: 2)
- ''परमेश्वर की सच्चाई और शब्द को *मोड़ने के लिए*'' (2कुरिन्थियों 2: 17; 4:2)
- और अंत में ''यीशु मसीह में *विश्वास नहीं करने के लिए* (जो केवल एक ही है जो हमारी धार्मिकता, पवित्रता और मोक्ष हो सकता है)'' (यूहन्ना 16:9; तुलना करें इब्रानियों 4:2 से)

(1) रोमियों 7:7–8 में पौलुस का तर्क है
यह व्यवस्था पाप का ज्ञान पैदा करता है।

लोगों को व्यवस्था के आधार पर धर्म या पवित्रता के लिए उद्धार करने की आवश्यकता है, क्योंकि व्यवस्था धार्मिकता या पवित्रता को पैदा नहीं कर सकता है! केवल व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश करने से यह एहसास होता है कि आप पाप करते हैं और व्यवस्था को बनाए नहीं रख सकते। इस प्रकार यह व्यवस्था केवल ज्ञान का उत्पादन कर सकता है कि पाप क्या है और पापी होने का गहरा विश्वास देता है।

नैतिक व्यवस्था पाप नहीं है – यह परमेश्वर के उद्देश्य या इरादे को छोड़ता नहीं है! नैतिक व्यवस्था का निश्चित रूप से एक उद्देश्य और लाभ है – यह लोगों को ''पाप'' (परमेश्वर की दृष्टि में) के बारे सिखाता है। ''पाप'' वह सब कुछ है जो परमेश्वर के लक्ष्य (इरादे) को छोड़ देता है, वह सब कुछ जो परमेश्वर की सीमाओं (नैतिक व्यवस्थाओं) को स्थानांतरित करता है और वह सब कुछ जो परमेश्वर की सच्चाई (शब्द) को मोड़ देता है। पाप बाइबल के परमेश्वर से स्वतंत्र आत्मनिर्भर जीवन जीने के लिए है! यीशु मसीह पर विश्वास ना करना पाप है।

पौलुस ने कभी भी दसवीं आज्ञा के अलावा पाप के रूप में अनुभव (माना) नहीं किया होगा, ''तुम लोभ ना करना (बुरी इच्छाओं को मिटाना)'' (रोमियों 7:7)। नैतिक नियम के अलावा (दस आज्ञाएं) पाप ''मृत'' रहता है, मनुष्य के पापी स्वभाव में पाप निष्क्रिय रहता है। नैतिक व्यवस्था का ज्ञान मनुष्य में जीवन के लिए पापी प्रकृति को उत्तेजित करता है और उसके अंदर हर प्रकार के पापी जुनून (इच्छा) को जगाता है (रोमियों 7:8)।

(1) रोमियों 7:9–11 में, पौलुस का तर्क है कि व्यवस्था पैदा करता है।

***व्यवस्था के बिना* मनुष्य सोचता है कि वह जीवित रहता है।**

जब तक लोग परमेश्वर के नियम (बाइबल में लिखी या उनके दिल में लिखी) का थोड़ा सा भी हिसाब नहीं लेते, तब तक उन्हें एहसास नहीं होता कि परमेश्वर की नजर में ''पाप'' क्या है।

- वे सोचते हैं कि वे ''जीवित'' हैं और वे *शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक और सामाजिक रूप से* जीते हैं, लेकिन आत्मिक रूप से नहीं।
- लेकिन निर्माता (बाइबल के परमेश्वर) से एक व्यक्तिगत संबंध के अलावा वे *केवल बनाए गए संसार के संबंध में* जीवित रहते हैं,
- वे *केवल उसी चीज के अनुसार* जीते हैं *जो लोग सोचते हैं,* लेकिन उस चीज के अनुसार नहीं जो परमेश्वर ने प्रकट की है।
- वे वैसे ही जीते हैं *जैसा वे खुद तय करते हैं,* न कि परमेश्वर के रूप में।
- वे भ्रम में रहते हैं कि वे काफी ''अच्छे, आत्म–धर्मी और आत्मनिर्भर'' हैं।
- वे बाइबल के परमेश्वर से *अलग* रहते हैं और सोचते हैं कि उन्हें किसी की जरूरत नहीं है।
- वे इस बात से *अनजान* रहते हैं कि उनके पास एक दुष्ट प्रकृति है।
- वे पाप के लिए परमेश्वर की सजा से *बेखबर* रहते हैं (तुलना करें रोमियों 3: 19– 20 से)!
- वे *नहीं जानते* कि परमेश्वर कैसे चाहते हैं कि उनको कैसे रहना चाहिए आवश्यक रूप से रहना चाहिए (तुलना करें रोमियों 13:8–10 से)
- वे *नहीं जानते* कि पृथ्वी पर अपने सभी दुष्ट रूपों में पाप पर अंकुश कैसे लगाया जाता है (तुलना करें 1तीमुथियुस 1:9–10से) (रोमियों 7:9)

व्यवस्था के साथ आदमी मर जाता है।

हालाँकि, परमेश्वर के उद्धार के इतिहास में नैतिक व्यवस्था का खुलासा होने के बाद और उसे परमेश्वर की वाचा में जोड़ा गया, (गलतियों 3:17,19) और लोगों ने परमेश्वर के व्यवस्था का गंभीरता से हिसाब लेना शुरू कर दिया, उनके अंदर पाप का स्वभाव उनके शरीर में एक भयावह तानाशाह बन गया और उनके विवेक में भयावह वास्तविकता। जितना अधिक लोग व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश करते हैं, उतना ही वे अपने कुल नैतिक और आत्मिक दुष्टता का अनुभव करते हैं (तुलना करें रोमियों 7:14–15 से)। जब लोग परमेश्वर के व्यवस्था का ध्यान रखना शुरू करते हैं, तो वे ''मर'' जाते हैं, अर्थात, ''अच्छाई, आत्म–धार्मिकता और आत्मनिर्भरता'' की उनकी कट्टर स्थिति समाप्त हो जाती है! तब उनकी झूठी सुरक्षा मर जाती है और वे दुख की और अनन्त धिक्कार के डर की स्थिति में आ जाते हैं (रोमियों 7: 9)

पाप में गिरने से पहले का व्यवस्था।

पाप में गिरने से पहले परमेश्वर ने अपना व्यवस्था आदम को दिया (उत्पत्ति 2:15–17): आदमी को परमेश्वर की रचना का ख्याल रखना था और अपनी स्वतंत्र इच्छा से परमेश्वर के द्वारा दी गयी सीमाओं के भीतर रहना था। यदि आदम ने परमेश्वर का नियम (धर्मी और पवित्र आवश्यकता) रखा होता, तो वह धर्मी (परमेश्वर की दृष्टि में) बना रहता। लेकिन क्योंकि उसने परमेश्वर के नियम को नहीं रखा, इसलिए उसकी मृत्यु हो गई। दोनों लैव्यव्यस्था 18:5 और रोमियों 10:5 ''जीवन'' को ''शाश्वत जीवन'' बनाए रखने का उल्लेख करता है, तब तक कि मनुष्य परमेश्वर के नियम को बनाए रखता है, जब तक कि मनुष्य पूरी तरह से धर्मी और पवित्र है! आदम के लिए परमेश्वर के नियम का उद्देश्य था कि वह अपनी धार्मिकता और अनंत जीवन की स्थिति को बनाये रखेगा (और ढीला नहीं) ; (रोमियों 7:10)! लेकिन परमेश्वर का अनंत जीवन इतिहास में केवल एक

बार ही संभव था, मनुष्य के पाप में गिरने से पहले!

पाप में गिरने के *बाद* का व्यवस्था।

पाप में गिरने के बाद परमेश्वर का व्यवस्था अब (परमेश्वर की आंखों में) अनन्त जीवन और धार्मिकता को (संरक्षण, जारी रखने और निश्चित रूप से नहीं दे सकता है) बनाये नहीं रख सकता है, क्योंकि मनुष्य अधर्म और मृत्यु की स्थिति में आ गया है (आध्यात्मिक, भौतिक और शाश्वत मृत्यु)! गिरने के बाद परमेश्वर का नियम किसी एक व्यक्ति को धर्मी नहीं बना सकता या उसे अनंत जीवन नहीं दे सकता!

पाप में गिरने के बाद परमेश्वर ने अनुग्रह के द्वारा अपने लोगो को गुलामी और दुख से बचाया और उसके बाद ही उन्हें अपने व्यवस्था (दस आज्ञाएँ) दिए ताकि वे अपने लोगों को यह सिखा सकें कि वे कैसे (चाहिए) उसके बचाये हुए लोगों के रूप में धरती पर रहें (तुलना करें निर्गमन 20:1-2 से)। पाप में गिरने के बाद परमेश्वर ने अपने (नैतिक) व्यवस्था को नियम को मानक के रूप में स्थापित किया कि परमेश्वर कैसे चाहते थे कि उनके लोग उनके जीवित लोगों के रूप में रहें।

फिर भी, हमेशा ऐसे लोग (फरीसियों की तरह) थे, जो मानते थे कि व्यवस्था को बनाए रखने के लिए (जितना संभव हो उतना अच्छा) उन्हें उचित और पवित्र ठहराया जाएगा। लोगों में पाप की प्रकृति लोगों को यह सोचने के लिए गुमराह करती है कि व्यवस्था अभी भी उन्हें सही और पवित्र कर सकता है।

परमेश्वर का व्यवस्था कैसे हर समय 100% आज्ञाकारिता की मांग करता है और जो किसी को भी सही ठहराता है जो पहले से ही एक बार परमेश्वर के नियम की अवज्ञा कर चुका है (याकूब 2:10; गलतियों 3:10)?

पाप में गिरने के बाद, यह स्पष्ट हो गया कि न केवल व्यवस्था के कार्यों द्वारा न्यायसंगतता पूरी तरह से असंभव थी, बल्कि (नैतिक) व्यवस्था के अनुसार एक पवित्र (आज्ञाकारी) जीवन जीना पूरी तरह से असंभव था! इसके बजाय, परमेश्वर का व्यवस्था लोगों को ''परमेश्वर की आँखों में पाप'' के बारे में जानकारी देने के लिए परमेश्वर का उपकरण बन गया और उनके पापी स्वभाव और ''आत्मिक रूप से मृत'' होने की स्थिति की गंभीरता की गहरायी का यकीन दिलाने के लिए बना। (रोमियों 7:10ब-11) व्यवस्था लोगों को यह दिखाने के लिए परमेश्वर का साधन बन गया कि वे आध्यात्मिक रूप से मर चुके हैं, कि वे शारीरिक रूप से मर जाएंगे और वे अनन्त मृत्यु (नरक) के लिए बर्बाद हैंय (यूहन्ना 3:18,36) - संक्षेप में: कि वे पूरी तरह से खो गए हैं और उन्हें खुद से बाहर उद्धारकर्ता की आवश्यकता है (और उनके सभी धार्मिक प्रयास)!

(1) रोमियों 7:12-13 में पौलुस का निष्कर्ष है कि व्यवस्था ''अच्छा'' है, लेकिन ऐसा उपकरण नहीं जो ''अच्छाई'' पैदा करता हो।

यद्यपि व्यवस्था (परमेश्वर का नैतिक व्यवस्था) अपने आप में ''पवित्र, धर्मी और अच्छा'' है (रोमियों 7:12) यह लोगों में पवित्रता, धार्मिकता और अच्छाई पैदा नहीं कर सकता है (तुलना करें रोमियों 7:8 से)। इसके बजाये ऐसा उपकरण की जो जीवन का उत्पादन करता है, व्यवस्था एक ऐसा साधन है जो किसी व्यक्ति में पापी प्रकृति को मृत्यु का पैदा करने के लिए उत्तेजित करता है। ऐसा व्यवस्था जो लोगों को एहसास कराता है कि वे आध्यात्मिक और नैतिक रूप से ''मृत'' हैं। व्यवस्था उनकी अपनी धार्मिकता और ''मृत्यु'' से झूठी सुरक्षा का कारण बनता है (रोमियों 7:13)।

व्यवस्था ''पाप के अत्यधिक पापी बनने का कारण बनता है'' (रोमियों 7:13ब)। व्यवस्था लोगों को दर्दनाक रूप से जागरूक करने का कारण बनता है कि वे कितने महान पापी हैं और उनके मानव स्वभाव कितने गैर-आत्मिक और अनैतिक हैं। व्यवस्था ''दर्पण'' बन जाता है, जिसमें लोग अपने कुल नैतिक और आध्यात्मिक अवगुण के

बारे में देखते हैं और जागरूक हो जाते हैंय (तुलना करें रोमियों 3:20 से)। नैतिक व्यवस्था उनके मानव स्वभाव को पूरी तरह से तीव्र ध्यान में लाता है। परमेश्वर की आज्ञाओं की नैतिक और आध्यात्मिक शुद्धता मनुष्य के पापी स्वभाव के नैतिक और आध्यात्मिक अवगुण को और अधिक स्पष्ट रूप से सामने लाती है। (तुलना करें रोमियों 5:20 से)! व्यवस्था के साथ परमेश्वर का उद्देश्य लोगों को यह दिखाना है कि वे कितने अधर्मी और कितने अपवित्र हैं! क्योंकि व्यवस्था केवल एक उपकरण है जो पाप को प्रकट करता है और पापी प्रकृति को गतिविधि के लिए उकसाता है, यह लोगों को न्यायोचित ठहराने के लिए कभी भी उपकरण (साधन) नहीं हो सकता है!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियों 1:1–17 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

7:7

प्रश्न 1. **लोभ का पाप क्या है (बुरी इच्छाओं को दूर करने)?**

ध्यान दें।

''लालच'' (ग्रीकः एपिथुमिया) का अर्थ हो सकता है ''एक अच्छी इच्छा या एक अच्छे अर्थ में लालसा'' (1थिस्सलुनीकियों 2:17) लेकिन इसका उपयोग गलत तरह से ''निषिद्ध इच्छा'' के रूप में किया जाता है। बाइबल में, निषिद्ध इच्छाएँ हैं:

- एक की शादी के बाहर लोगों के प्रति *यौन इच्छाएँ* (भावुक वासना) (1थिस्सलुनीकियों 4:5)
- *मूर्ख इच्छाएं* (1तीमुथियुस 6:9)
- *भ्रामक इच्छाएं* (इफिसियों 4:22)
- *सांसारिक इच्छाएं* (तीतुस 2:12)
- दुराचार और अपराध करने वाले लोगों की *भ्रष्ट इच्छाएं* (2पतरस 2 :7 –10)।

''पाप'' और ''लोभ'' में कोई अंतर नहीं है। परमेश्वर का नियम मानव हृदय में ऐसी सभी बुरी इच्छाओं को उजागर करता है (तुलना करें मरकुस 7:20–23 से)। नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाओं) के बिना, लोगों को पता नहीं होता कि ऐसी इच्छाएं ''बुराई'' हैं और उनके मानव स्वभाव में पाप के छिपे हुए स्रोत के बारे में पता नहीं होता। जब लोग सचेत हो जाते हैं कि उनके दिल में ऐसी बुरी इच्छाएँ हैं, तो उन्हें पता चल जाता है कि मानव स्वभाव से वंचित है, अर्थात् वह मनुष्य प्रकृति से परमेश्वर के लक्ष्य से चूक जातें है और परमेश्वर की इच्छा का विरोध करतें है। वे अधिक से अधिक आश्वस्त हो जाते हैं कि उनकी पूरी मानव प्रकृति को हटा दिया गया है।

लालच दसवीं आज्ञा के विरुद्ध एक पाप है, ''तुम लालच न करना!'' (निर्गमन 20:17)। बाइबल में लालच के कई उदाहरण हैं:

- हव्वा ने एक पेड़ के फल का लालच किया, जिसे परमेश्वर ने *मना किया था* (उत्पत्ति 3:6)।
- यूसुफ के भाइयों ने अपने परिवार में अपनी *स्थिति* का लालच किया (उत्पत्ति 37:4)।
- आकान ने यरीहो के *बिगाड़ या खजाने* का लालच किया (यहोशू 7:21)।
- अहाब ने नाबोत की दाख की बारी का लालच किया *जिस पर किसी और का कब्जा था* (1राजाओं 21:1)।
- अम्नोन ने *एक महिला* का लालच किया *जो उसकी अपनी नहीं थी* (2शमूएल 13:1)।
- अबशालोम ने दाऊद के *सिंहासन* का लालच किया (2शमूएल 15:1)।
- हनन्याह और सफीरा कलीसिया में *प्रतिष्ठा* का लालच किया (प्रेरितों 5:1)।
- शमौन ने *अपनी आँखों में पवित्र आत्मा को चमकाने की जादुई शक्ति* का लालच किया (हाथों को बिछाकर) (प्रेरितों 8:18च)।
- देमास ने *वर्तमान दुनिया* का लालच किया (2तीमुथियुस 4:10)।
- बहुत से लोग दुकानों में या दूसरों के कब्जे में *चीजों* का लालच करते हैं(1यूहन्ना 2:16)।
- दियुत्रिफेस ने कलीसिया में *पूर्व-प्रतिष्ठित (सर्वोच्च स्थान)* होने का लालच किया (3यूहन्ना)

7:8

प्रश्न 2. **कथनों में क्या अंतर है:**

– "व्यवस्था के बिना, कोई पाप नहीं है" (रोमियों 4:15),

– "व्यवस्था के बिना, पाप को ध्यान में नहीं रखा जाता है" (रोमियों 5:13) और

– "व्यवस्था के बिना, पाप मर चुका है" (रोमियों 7:8)?

ध्यान दें। रोमवासियों को लिखे पत्र में, प्रेरित पौलुस "व्यवस्था" शब्द का कई अलग-अलग तरीकों से उपयोग करता है। "व्यवस्था" का मूल अर्थ यह है कि 'व्यवस्था' परमेश्वर की एकमात्र आवश्यकता है जो सभी लोगों को अपने जीवन के आरंभ से अंत तक पूर्ण और पूर्ण धर्मी और पवित्र जीवन जीना चाहिए और सभी लोगों के सभी पापों (अपराधों) को पूरी तरह से दंडित किया जाना चाहिए। यह उद्धार के लिए परमेश्वर का पूरा नियम और परमेश्वर की और से दशा है, फिर चाहे वह लोगों के दिलों पर लिखे गए व्यवस्था या बाइबल में लिखे व्यवस्था के रूप में ही क्यों न हो। व्यवस्था परमेश्वर का आध्यात्मिक और नैतिक मानक है, जिसके अनुसार उसके सभी तर्कसंगत प्राणी अनुरूप होने के लिए बाध्य हैं। व्यवस्था दोनों ही न्यायसंगत (धर्मी बनने) और पवित्रीकरण (पवित्र बनने) के लिए परमेश्वर का पूर्ण मानक है।

व्यवस्था पूर्ण आज्ञाकारिता और पूरी तरह से पवित्र जीवन के अपने अनम्य मानक के अनुरूप सभी अभाव की निंदा करता है। गलतियों 3:10 कहता हैं, "वह शापित है जो व्यवस्था की पुस्तक में लिखी गई हर बात को करना जारी नहीं रखता है।" और, याकूब 2:10 का कहना है, "जो कोई भी पूरे व्यवस्था को मानता है और यदि सिर्फ एक बिंदु पर ठोकर खाता है, वह पूरे व्यवस्था को तोड़ने का दोषी है।"

तीनों कथनों में नकारात्मक बयान करके, पौलुस सकारात्मक पर जोर देता है। पौलुस इस बात पर जोर देता है कि व्यवस्था ने हमेशा लोगों को दिखाया कि उनके पास पाप है और परमेश्वर ने उनके पापों के लिए उनकी निंदा की। लेकिन क्योंकि ये तीनों कथन व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं की बात करते हैं, इसलिए इनकी अलग से व्याख्या की जानी चाहिए।

(1) रोमियों 4:15। प्रत्येक व्यक्ति की निंदा के लिए व्यवस्था का संबंध।

- नकारात्मकः "जहाँ कोई व्यवस्था नहीं है, वहाँ कोई अपराध (पाप) नहीं है"
- सकारात्मकः "जहां व्यवस्था है, वहां अपराध (पाप) भी है"

- ''व्यवस्था'' यहां परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता हैः अर्थात, सभी लोगों को पूरी तरह से धार्मिक और पवित्र होना चाहिए और सभी पापों को दंडित किया जाना चाहिए।

यहाँ कभी और कहीं भी ऐसा मामला नहीं हुआ कि जहाँ कोई व्यवस्था नहीं है और वहां कोई अपराध नहीं हो !

इस प्रकार, हमेशा और हर जगह जहां व्यवस्था मौजूद है, अपराध मौजूद है।

पौलुस ''व्यवस्था को परमेश्वर की न्यायसंगतता के रूप में पूर्ण आवश्यकता'' के बारे में बोलता है। व्यवस्था हर इंसान के दिल पर लिखा है (रोमियों 2:15) और बाइबल में सफेद पर काला लिखा है (रोमियों 2:17-24)। क्योंकि मानवता के इतिहास में कोई भी इंसान व्यवस्था के बिना नहीं है, और प्रत्येक मनुष्य के अपराध (पाप) का ध्यान (रोमियों 2:6) पर लिया जाएगा और प्रत्येक मनुष्य को उस व्यवस्था के अनुसार आंका जाएगा, जो उसके पास है (रोमियों 2:12)। जहाँ भी व्यवस्था मौजूद है वहां व्यवस्था परमेश्वर के क्रोध के बारे में बताता है (रोमियों 4:15)। व्यवस्था पूर्ण आज्ञाकारिता की मांग करता है। क्योंकि कोई भी इंसान (यीशु मसीह को छोड़कर) व्यवस्था का पूरी तरह से पालन नहीं करता है या कर सकता है, हर इंसान की पापी के रूप में निंदा (बर्बाद) होती है। अगर कोई इंसान होता जो पूरी तरह से व्यवस्था का पालन कर सकता, तो वह परमेश्वर के द्वारा न्यायसंगत होगा और अनन्त जीवन प्राप्त करेगा। लेकिन यह केवल मनुष्य के पाप में गिरने से पहले संभव था (उत्पत्ति 2:15-17; तुलना करें लैव्यव्यवस्था 18:5 से; रोमियों 10:5)।

लेकिन क्योंकि सभी लोगों के पास व्यवस्था है और किसी भी व्यक्ति ने व्यवस्था (पूरी तरह से) का पालन नहीं करा है, ''हर मुंह को खामोश कर दिया जाता है और पूरी दुनिया को परमेश्वर के प्रति जवाबदेह ठहराया जाता है'' (रोमियों 3:19)। परमेश्वर की न्यायसंगतता की पूर्ण आवश्यकता और उसकी निंदा के लिए मानक के रूप में व्यवस्था केवल लोगों के खिलाफ परमेश्वर का क्रोध लाता है!

रोमियों 4:15 में व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जोर दिया गया है।

(2) रोमियों 5:13। पूरी मानव जाति की निंदा के लिए व्यवस्था से संबंध।

- नकारात्मकः ''जब कोई व्यवस्था नहीं है, तो पाप को ध्यान में नहीं रखा जाता है''।
- सकारात्मकः ''जब व्यवस्था है, तो पाप को ध्यान में रखा जाता है।''
- ''व्यवस्था'' यहाँ मूसा (नैतिक व्यवस्था, औपचारिक व्यवस्था और नागरिक व्यवस्था) का लिखित व्यवस्था है जो केवल आदम और मूसा के बीच की अवधि में है।

मूसा के समय से पहले रहने वाले सभी लोगों के पास मूसा का लिखित व्यवस्था नहीं था। नतीजतन, उनकी मूसा के किसी भी लिखित व्यवस्था को स्थानांतरित करने के लिए निंदा नहीं की गई थी।

फिर भी, आदम और मूसा के बीच के ये सभी लोग मर गए। क्योंकि मृत्यु पाप की मजदूरी है (रोमियों 6:23), यह साबित करता है कि आदम और मूसा के बीच सभी लोग किसी न किसी तरह के पाप को साझा किया था। क्योंकि वे मूसा के व्यवस्था के अधिकारी नहीं थे, इसलिए वे मूसा के व्यवस्था के अपने अपराधों के लिए नहीं मरे।

फिर वे किसके व्यवस्था के अपराधों के लिए दोषी और दंडित (मौत के साथ) किये गए थे? एकमात्र संभव निष्कर्ष यह है कि उन्हें उस एकमात्र व्यवस्था के अपराध के लिए दोषी और दंडित किया गया (मृत्यु के साथ) जो कि परमेश्वर ने आदम को पाप के पतन से पहले को दिया था (उत्पत्ति 2:15-17)! परमेश्वर आदम को पूरी मानव जाति का प्रतिनिधि और प्रमुख मानते है। जब आदम ने पाप किया और उसे मौत की सजा दी गई, तो पूरी मानव जाति को उनके प्रतिनिधि (आदम) के साथ एकजुटता में दोषी (बर्बाद) किया गया और सजा

दी गयी (मौत के साथ) (रोमियों 5:12, 17अ:18अ, 19अ; 1कुरिन्थियों 15:22)
हालाँकि आदम और मूसा के बीच सभी लोगों ने निश्चित रूप से व्यक्तिगत पाप किए थे, लेकिन उन्हें मूसा के लिखित व्यवस्था के खिलाफ अपने व्यक्तिगत पापों के लिए दंडित नहीं किया गया था, क्योंकि वे अभी तक मूसा के लिखित व्यवस्था के अधिकारी नहीं थे। इसलिए उन्हें दोषी ठहराया गया था और एक व्यवस्था के लिए दंडित किया गया था जो आदम ने उलंघन किया था (उत्पत्ति 2:15-17)।

रोमियों 5: 13 में आदम की प्रतिनिधि जिम्मेदारी पर जोर दिया गया है!

(3) रोमियों 7:8। पाप को सक्रिय करने और दुष्टता का अनुभव करने के लिए व्यवस्था का संबंध।

- नकारात्मकः ''व्यवस्था के बिना पाप मर चुका है।''
- सकारात्मकः ''व्यवस्था के साथ, पाप जीवन में बढ़ता है।''
- ''व्यवस्था'' यहाँ नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाएँ) है।

ये बात कहने का एक और तरीका है, ''पाप की शक्ति व्यवस्था है'' (1कुरिन्थियों 15:56)

पौलुस ''व्यवस्था को परमेश्वर की न्यायसंगतता के लिए पूर्ण आवश्यकता'' नहीं कहता है, लेकिन ''व्यवस्था को पवित्रता (पवित्रीकरण) के लिए परमेश्वर की पूर्ण आवश्यकता के रूप में कहता है। वह परमेश्वर के नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाओं) के बारे में बोलता है जो लोगों को बताती है कि परमेश्वर की नजर में क्या सही है और क्या गलत है और परमेश्वर के लोगों को दिखाता है कि उन्हें कैसे परमेश्वर के बचाए (न्यायोचित्त या धर्मी) लोगों के रूप में रहना चाहिए। पौलुस का कहना है कि नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाओं) के बिना पाप में मनुष्य के पाप के स्वभाव में निष्क्रिय रहता है (अर्थात, ''मृत'')। जब तक कोई व्यक्ति नैतिक व्यवस्था की अवहेलना करता है, तब तक मनुष्य के पापी स्वभाव में पाप निष्क्रिय है।

लेकिन जब कोई व्यक्ति नैतिक व्यवस्था का ध्यान रखना शुरू करता है, तो वह पाप जो उसके पापी स्वभाव में निष्क्रिय होता है, सक्रिय हो जाता है (यह जीवन को बढ़ाता है)! कोई व्यक्ति नैतिक व्यवस्था को जितना बनाए रखने की कोशिश करता है, वे और अधिकः

- व्यवस्था मौत के लिए फल लाने के लिए पापी प्रकृति पैदा करता है (रोमियों 7: 5)
- व्यवस्था शरीर में हर तरह के लोभ की इच्छा पैदा करता है (रोमियों 7:8)
- व्यक्ति को उसके शरीर में ''पाप के व्यवस्था'' का कैदी बनाता है (रोमियों 7:23)
- व्यक्ति को यह महसूस करने का कारण बनता है कि वास्तविकता में उसके मानव स्वभाव को कैसे दोषी किया गया है? (रोमियों 7:23-24)

पाप जीवन में बढ़ता है और वह ''मर जाता है'' (रोमियों 7:9), अर्थात, एक अच्छा व्यक्ति, आत्म-धर्मी और अभिमानी होने की उसकी कल्पना की स्थिति समाप्त हो जाती है। तब उसकी सुरक्षा (बचाव) की झूठी भावनाएं मर जाती हैं और वह दुख की स्थिति में आ जाता है और उसे अनन्त शाप की धमकी दी जाती है।
''जीवन'' को लाने वाले एक साधन के बजाये, नैतिक व्यवस्था एक ऐसा साधन बन गया है जो ''मृत्यु'' लाता है। नैतिक व्यवस्था सभी आत्म-धार्मिकता, झूठी सुरक्षा और मनुष्य की भलाई की कल्पना को मारता है। (रोमियों 7:9) नैतिक व्यवस्था लोगो को एहसास करता है की वह अपने पाप और अपराधों के कारन मर चुके हैं (इफिसियों 2:1)।

रोमियों 7:8 में मानव प्रकृति के पाप और अवक्षेपण के व्यक्तिगत अनुभव पर जोर दिया गया है।

7:7–13

प्रश्न 3. **इस पद में पौलुस के व्यक्तिगत अनुभव को किस चरण को चित्रित किया गया है? क्या यह एक अपुनर्जीवित व्यक्ति या एक पुनर्जीवित व्यक्ति का अनुभव है?**

ध्यान दें। यह सबसे अधिक संभावना है कि यह पद पौलुस के व्यक्तिगत अनुभव को उसके रूपांतरण के ठीक पहले, उसके दौरान और उसके कुछ समय बाद को बताता है।

जब पौलुस अभी भी एक अपुनर्जीवित फरीसी (प्रेरितों 26:5), था वह स्वयं आत्मनिर्भर था और खुद को किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में मानता था जो मूसा के लिखित व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए बहुत धार्मिक और ''धर्मी'' था। ''व्यवस्थायी वैधता के लिए, दोषरहित'' (फिलिपियों 3:6)। अपने जीवन में लंबे समय तक, उसने बाइबल में लिखे व्यवस्था के साथ खुद को बौद्धिक रूप से बाँध कर रखा और 613 रखने के लिए फरीसी के रूप में कोशिश की और मूसा के पारंपरिक व्यवस्थाओं को जोड़ा। लेकिन बस परमेश्वर के नैतिक नियम (दस आज्ञाएं) जो 100% धार्मिकता और 100% पवित्रता की मांग करते है, उसके जीवन में कार्य नहीं किया। वह ''नैतिक व्यवस्था से अलग रहता था'' (रोमियों 7:9) धार्मिक आत्म–धार्मिकता और एक फरीसी के आत्मिक घमंड में।

पौलुस कहता हैं, ''व्यवस्था के अलावा, पाप मृत है (निष्क्रिय)'' पापी मानव स्वभाव में (रोमियों 7:8) पौलुस हमें यह नहीं बताता है कि उसने अपने जीवन में वह परमेश्वर के नैतिक व्यवस्था को कब गंभीर रूप से लेना शुरू किया, जब उसने जीवन में महसूस करना शुरू कर दिया कि क्या ''पाप और लोभ'' वास्तव में क्या थे (रोमियों 7:7) और जब नैतिक व्यवस्था ने उसके मानव स्वभाव में हर तरह के लोभ की इच्छा पैदा करने के लिए उसके मानव स्वभाव में पाप को सक्रिय किया (रोमियों 7:8)। यह उसके रूपांतरण से पहले शुरू हुआ होगा उसके फिर से जन्म लेने से पहले।

''जीवन में पाप के बढ़ा और वह मर गया'' (रोमियों 7:9) इस अनुभव को संभवतः दमिश्क की सड़क पर उसके नाटकीय रूपांतरण के साथ जोड़ा जाना चाहिए, या दमिश्क में अनन्या के साथ उसके संपर्क के साथ, या उसके तीनों के दौरान घटनाओं के साथ। अरब में उसके 3 वर्ष रहने के दौरान (प्रेरितों अध्याय 9,22,26; गलतियों 1:13–18)। तब यह था कि मसीही कलीसिया के इस पूर्व उत्पीड़क के पास अपने धर्मांतरण से पहले उस तरह के व्यक्ति को प्रतिबिंबित करने का समय था, जो सताए हुए मसीहियों की गवाहियों के बारे में सोचने के लिए जिसे उसने मरने में मदद करी थी और अपने प्रारंभिक मसीही जीवन में मसीहियों की शिक्षाओं को सुना था। यह तब था जब उनके पास दमिश्क के रास्ते पर यीशु के शब्दों पर स्वयं ध्यान करने का समय थाः ''मैं नासरत का यीशु हूँ, जिसे आप सता रहे हैं'' (प्रेरितों 22:8) और व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं में मार्ग पर ध्यान करने के लिए जो कि मोक्ष के रास्ते को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं (उत्पत्ति 15:6; भजन 32:1–11; यशायाह 52:13–53; 12; हबक्कूक 2:4)।

यह तब था कि पौलुस को अपनी आध्यात्मिक उदासीनता से जगाया गया था, वह इस बात से परिचित हो गया था कि वह वास्तव में कितना पापी था और उसके पापी अभिमान और आत्म–निर्भरता ''मर गयी'', अर्थात् ''अंत हो गयी (रोमियों 7:9)!'' यह तब था जब उसने महसूस किया कि नैतिक आज्ञाएँ, जो परमेश्वर के बचाए हुए लोगों को ''जीवित'' करने के लिए मार्गदर्शन करने के लिए थीं, वास्तव में उसके जैसे धार्मिक लोगों के लिए ''मौत'' लाईं जिन्हें व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए उसे उचित ठहराने की कोशिश करी थी। व्यवस्था का पालन करने की कोशिश करने से, उसे एहसास हुआ कि वह व्यवस्था का पालन नहीं कर सकता है और उसने व्यवस्था का पालन नहीं किया है, लेकिन यह कि उसका मानव स्वभाव (अब भी एक मसीही के रूप में) पूरी तरह से दोषी था और अपने रूपांतरण से पहले वह आत्मिक रूप से ''मृत'' हो चुका था। (तुलना करें रोमियों 3:10–20; इफिसियों 2:1–4)

यह वह नैतिक व्यवस्था नहीं था जिसने उसे धोखा दिया था, क्योंकि नैतिक व्यवस्था ''पवित्र, धर्मी और अच्छा'' है (रोमियों 7:12)।

यह उनका अपना अगाध पापी स्वभाव था, जिसने उन्हें विश्वास करने से रोका था कि उन्हें व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा न्यायसंगत ठहराया जा सकता है (अन्य फरीसियों के 613 पारंपरिक व्यवस्थाओं में व्याख्या की गई है)। उनके पापी स्वभाव ने परमेश्वर के नैतिक व्यवस्थाओं के ज्ञान का दुरुपयोग किया, जो वास्तव में सभी प्रकार की निषिद्ध चीजों को करवाता था। नैतिक व्यवस्था के ज्ञान के कारण उसे एहसास हुआ कि वह कितना निपुण था, उसने अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को कितना खो दिया और उसे एक उद्धारकर्ता की कितनी आवश्यकता थी! नैतिक व्यवस्था के ज्ञान ने उसकी आत्म-धार्मिकता, आत्म-संतुष्टि और कल्पना के आश्वासन को मार दिया कि वह ''एक धर्मी फरीसी'' था (रोमियों 7:10-11, 13)।

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 7:1-13 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 7: 1 - 13 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

7:1-4. कोई भी एक ही समय में व्यवस्था और यीशु मसीह के लिए बाध्य नहीं हो सकता है! आप व्यवस्था के कामों से न्यायोचित होने की कोशिश उसी समय पर नहीं कर सकते हैं जब आप यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की कृपा से न्यायोचित हो सकते हैं! मसीह के साथ ''जीवित'' रहने से पहले आपको पहले व्यवस्था के लिए ''मरना'' चाहिए। यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की कृपा से आपके द्वारा उचित ठहराए जाने से पहले आपको व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश करने से रोकने की कोशिश करनी चाहिए।

7:6. केवल जब आप व्यवस्था के लिए ''मर जाते'' हैं, तो आप पवित्र आत्मा के नए तरीके से सेवा करने के लिए और ''जीवित'' रहने के लिए स्वतंत्र हैं।

7:7. निर्गमन 20:1-17 व 5:21-48 में दस आज्ञाओं में से हर एक पर ध्यान दें और महसूस करना शुरू करें कि आपने व्यक्तिगत रूप से हर एक आज्ञा का एक या दूसरे तरीके से उलंघन किया है। परमेश्वर की नजर में पाप क्या है, इसे समझें।

7:8. महसूस करें कि आपका पापी स्वभाव बहुत शक्तिशाली अत्याचारी है। यह परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं के बारे में आपके ज्ञान का इस्तेमाल करेगा ताकि आपमें हर तरह की बुरी इच्छा पैदा हो सके।

7:9-11. परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं को किस तरह से तैयार करना आपकी पिछली धार्मिकता, आत्मनिर्भरता और झूठी प्रतिभूति को मौत देता है।

7:12. अपने दृढ़ विश्वास को स्पष्ट करें कि परमेश्वर का नैतिक नियम (दस आज्ञाएं) पवित्र, धार्मिक और अच्छी क्यों है।

2. <u>रोमियों 7:1–13 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।</u>

मैं अपने पापी स्वभाव के बारे में अधिक यथार्थवादी होना चाहता हूं। मैं उतना अच्छा नहीं हूं जितना मैं अक्सर सोचता हूं कि मैं हूं। मुझे एहसास है कि मुझमे निषिद्ध इच्छाएं है, जैसे निषिद्ध यौन इच्छाएं, मूर्ख इच्छाएं, भ्रामक इच्छाएं, सांसारिक इच्छाएं और नैतिक रूप से भ्रष्ट इच्छाएं। कभी–कभी, हव्वा की तरह, मैंने परमेश्वर द्वारा किसी निषिद्ध चीज का लालच किया है। मैं स्वीकार करता हूं कि निषिद्ध इच्छाएं मेरे पापी स्वभाव में पायी जाती है। मुझे महसूस होता है कि मैं अपने पापी स्वभाव में कितना दोषी हूं, और मैं अपने पापी स्वभाव के प्रभुत्व से अधिक से अधिक मुक्त होने की इच्छा रखता हूं।

मैं अपने उपदेश और शिक्षा में परमेश्वर के नैतिक व्यवस्था का अधिक उपयोग करना चाहता हूं। प्रत्येक आराधना सभा में मैं दस आज्ञाओं को पढ़ना चाहता हूं और शीघ्र ही स्पष्ट रूप से दस आज्ञाओं में से एक का अर्थ सिखाना चाहता हूं।

<u>चरण 5. प्रार्थना।</u> **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 7:1–13 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. **समर्पण।** चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 7:1–13 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. **<u>परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।</u>** प्रतिदिन **भजन संहिता 115,119:1–88, 119:89–176 व 139** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **<u>स्मरण करना।</u> (3) परमेश्वर संप्रभु हैः इफिसियों 1:11–12।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **<u>शिक्षा देना।</u>** मत्ती 9:14–17 में निहित **"दूल्हा, और पैबन्द लगा वस्त्र और मशकें" के दृष्टांत** की तैयारी करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर <u>अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।</u> शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।